मुकुवन गांव बना उपवन

गनीवां। रानीपुर खाकी का मुकुवन पुरवा गांव एकदम से बदल गया है और यह संभव हुआ है गांव की उन बालिकाओं की पहल पर जिन्होंने न केवल परिवार को इस परिवर्तन के लिए तैयार किया, बल्कि पूरे गांव को स्वच्छता से समृद्धि आने की समझ विकसित करने का काम किया।

दीनदयाल शोध संस्थान के समाजशिल्पी दज़्पति अनिल शुज़्ला एवं शालिनी शुज़्ला जब ग्राम सज़्पर्क के दौरान रानीपुर खाकी के मुकुवन पुरवा गांव पहुंचे तो उन्हें यह देखकर आश्चर्य हुआ कि ये गांव आज भी काफी पीछे चल रहा है। शिक्षा के क्षेत्र में सिर्फ एक बालिका ऐसी थी, जिसने 12वीं तक की पढ़ाई पूरी की थी और पढ़ाई के बाद भी उसका कोई उपयोग नहीं था। बिजली वहां के लिए स्वप्न जैसी थी। गांव के बहू-बेटियों के पास कोई काम नहीं था। घर के काम से फुर्सत होने के बाद खाली रहती थी। समाजशिल्पी दज़्पति ने परिवर्तन की पहल की। पहली बैठक गांव के लोगों की बुलाई गई, पहुंचे केवल पांच लोग। वहां निर्णय किया गया कि गांव में सिलाई प्रशिक्षण का कार्यक्रम रखा जाय। योजना बन गई, लेकिन प्रशिक्षण कौन लेगा। इसके बाद लोगों से बातचीत की गई, तब कहीं जाकर 25 बालिकाओं और बहूओं को प्रशिक्षण के लिए तैयार किया जा सका। तीन माह के प्रशिक्षण कार्यक्रम में उन्हें दीनदयाल शोध संस्थान के लोगों के साथ ज्यादा समय रहने का मौका मिला। इससे उनके मन को बदलवे का काम हुआ। इसके बाद गांव में सौ परिवार को लेकर स्वच्छता का कार्यक्रम प्रारज़्भ किया गया। सभी परिवारों में उन 25 बालिकाओं और बहुओं ने तुलसी पौध रोपण किया और गृहवाटिका बनाने में सहयोग देने लगीं। इसके बाद कृषि से जुड़े लोगों को खेती के तरीके बताए गए। उन्हें उन्नत किस्म के बीज उपलज़्ध कराए गए। तब उन्हें महसूस होने लगा कि ये काम उन्हें खुद से करना चाहिए। इसके बाद समग्र स्वच्छता अभियान चलाया गया। पूरे गांव की सफाई लोगों ने मिलकर किया। सभी ने अपने दरवाजे पर पांच-पांच दीपक जलाकर अपने माता-पिता और बुजुर्गों का पूजन भी किया। परिणाम यह हुआ कि गांव स्वच्छता में दूसरो के लिए प्रेरणा बन गया। जल्द ही गांव में बिजली पहुंच गई। इसके अतिरिज़्त ग्राम भारती के सहयोग से बालसंस्कार केन्द्र का शुभारज़्भ हुआ। सिंचाई परियोजना का प्रोजेज़्ट मुकवन पुरवा में प्रारज़्भ होने वाला है।

रेशम की खेती से बढ़ी आय

अंबाजोगाई। कृषि विज्ञान केन्द्र की सलाह और सहयोग एवं अपनी इच्छाशज़्ति ने किसान की आर्थिक स्थिति बदल गई। बीड जिले के वरपगांव के किसान शुक्राचार्य राऊत ने परज़्परागत खेती को अपनाए रखते हुए रेशम कीट पालन का काम शुरू किया और उससे न केवल उनकी आमदमी में बढ़ोत्तरी हुई, बल्कि दलहन, तिलहन की खेती भी प्रभावित नहीं हुई। किसान शुक्राचार्य के पास जमीन तो बहुत थी, लेकिन पैदावार इतनी नहीं हो पाती थी कि परिवार का खर्च चल सके। वह दिन-रात मेहनत करते और बाद में जब हिसाब जोड़ा जाता तो आमदनी नहीं के बराबर रहती थी। एक दिन वह कृषि विज्ञान केन्द्र के वैज्ञानिकों के सज़्पर्क में आए। उन्हें सारा हाल बताया। वैज्ञानिकों द्वारा खेत पर जाकर देखा गया। जमीन उनकी अच्छी थी, लेकिन तरीका बेहतर नहीं होने के कारण पैदावार में कमी थी। वैज्ञानिकों ने डेढ़ एकड़ जमीन में रेशम की खेती करने की सलाह दी। इसके साथ किसान को रेशम की खेती के लिए जरूरत की चीजें उपलज़्ध कराई गई। शुक्राचार्य ने रेशम की खेती शुरू की। पहले साल ही उन्हें फायदा मिला। इसके बाद उन्होंने रकबा बढ़ा दिया। लगातार तीन साल तक खेती करने के बाद आज किसान की आय दोगुना हो गई है। इसके साथ उनकी परज़्परागत तिलहन और दलहन की खेती भी सुचारू रूप से हो रही है। इस किसान से प्रेरणा लेकर आसपास के करीब दस किसानों ने रेशम की खेती में दिलचस्पी दिखाई है। बीड़ महाराष्ट्र का कम वर्षा वाला क्षेत्र है। वहां कृषि विज्ञान केन्द्र लगातार किसानों के बीच उन्नत खेती के लिए काम कर रहा है।